an>

Title: Need to grow and use mosquito-eating fish and frogs to control vector-borne diseases in the country.

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ) ः देश में मच्छर जनित बीमारियों यथा डेंगू, चिकुनगुनिया, इंसेफेलाइटिस, मलेरिया आदि का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। बाजार में मच्छरों को मारने या भगाने के अनेक उत्पाद हैं लेकिन मच्छर जनित बीमारियां बढ़ती ही जा रही हैं। मच्छरों से निपटने के लिए दी जाने वाली दवाएं उल्टे उन मच्छरों को ही ताकतवर बना रही हैं। इन बीमारियों से बचने के लिए मच्छरों की पैदावार को नियंत्रित किया जाना जरूरी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि मच्छरों की वृद्धि दर को रोकने के लिए सरकार को मेंढकों की आबादी बढ़ाने के उपायों पर विचार करना होगा। दरअसल मच्छरों का लार्वा मेंढकों का प्रिय भोजन है। सिर्फ 50 मेंढक एक एकड़ धान की खेती को सभी प्रकार के कीटों से बचा सकते हैं। एक मेंढक अपने जीवनकाल में 15 से 16 लाख मच्छरों को नष्ट कर देता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मलेरिया रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार कुछ दशक पहले तक मेंढकों की टांगों का निर्यात यूरोपीय देशों को होता था, जिसे 1972 में प्रतिबंधित कर दिया गया, लेकिन तब तक मेंढकों की संख्या में भारी गिरावट आ चुकी थी। जलाशयों में मेंढकों की संख्या घटी और मच्छर कई गुना बढ़ गये तथा परिणामतः रोगवाहक मच्छरों से मलेरिया, डेंगू, इंसेफेलाइटिस, चिकनगुनिया तथा मच्छरों से फैलने वाली बीमारियां भी पूरे भारत में तेजी से बढ़ने लगीं।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि मच्छर जनित बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मेंढकों तथा मच्छर खाने वाली मछलियों की फार्मिंग कर उन्हें नहरों, तालाबों, जलाशयों, नाले-नालियों तथा पानी के स्रोतों में छोड़ने की परियोजना प्रारंभ की जानी चाहिए। साथ ही मेंढकों की टांगों के अवैध निर्यात पर रोक लगायी जानी चाहिए।